मेरी अक्ल पर पत्थर पड़े

प्रफुल्ल कोलख्यान

सच्चा आशिक और समर्थक तो वही
होता है, जो अंत तक इंतजार करे।
और किसी भी सूरत में, अंत का
दोषारोपण अपने महबूब पर न करे।
जिसके इंतजार का हौसला अध-बीच में ही न टूट
जाये, जीये या मरे।
सच्चे महबूब को हाँ, रत्ती भर भी कोई फर्क न पड़ा है
और न कभी पड़े।
यही तो इम्तिहान है, कि उसीके के नाम पर सुबह-
शाम, सबसे झगड़े।
उस पर सदा नरम रहे, न कभी जरा भी गरम हो और
न कभी उखड़े।
उसे तुक बहुत पसंद है, मैं तुक मिला रहा हूँ, मेरी
अक्ल पर पत्थर पड़े।